पाठ - 19

रामकृष्ण परमहंस

‘‘मैं तुम्हें सत्य बताता हूँ। संसार में तुम्हारे रहने से कोई बुराई नहीं है। किंतु अपने मन को भगवान की ओर मोड़ दो, अन्यथा तुम सफल नहीं हो पाओगे। एक हाथ से सांसारिक काम-काज करो और दूसरे से भगवान को पकड़े रहो। जब तुम्हारा सांसारिक काम-काज पूरा हो जायेगा तो भगवान को पकड़कर ही रहोगे।‘‘-रामकृष्ण परमहंस

भारत की पुण्यभूमि पर अनेकों तेजस्वी महापुरुषों का जन्म हुआ है। ऐसे ही मानवता व विचारों की अनवरत धारा बहाने वाले स्वामी रामकृष्ण परमहंस का जन्म 18 फरवरी, 1836 को बंगाल प्रांत के एक छोटे से गाँव कामारपुकुर में हुआ था। यह कोलकाता से सत्तर मील दूर पश्चिम में है। इनके बचपन का नाम

गदाधर था। पिता खुदीराम और माता चंद्रमणि थीं। पिता धर्मपरायण और सरल स्वभाव के व्यक्ति थे। परिवार बहुत गरीब था, लेकिन इनमें ईश्वर के प्रति अटूट आस्था, अपार श्रद्धा एवं प्रबल प्रेम था। यही समस्त गुण रामकृष्ण परमहंस में भी व्याप्त थे।

सत्रह वर्ष की आयु में वे कोलकाता आए। यहाँ उन्होंने अनुभव किया कि सभी प्रकार के सांसारिक ज्ञान का लक्ष्य केवल भौतिक उन्नति ही है। अतः उन्होंने मन ही मन संकल्प किया कि वे अपना जीवन केवल आध्यात्मिक ज्ञान की उपलब्धि में लगाएँगे जिससे शाश्वत शांति की प्राप्ति निश्चित रूप से हो सके।

अल्प समय के भीतर ही वे दक्षिणेश्वर स्थित काली मंदिर के पुजारी बन गए। रामकृष्ण दिन-रात साधना में लीन रहते। इनकी भक्ति को देखकर सभी आश्चर्य करते थे। रामकृष्ण दैवी शक्ति की भक्ति ‘माँ‘ के रूप में करते थे। वे एक बच्चे की भाँति माँ की याद में तड़पते और रुदन करने लगते थे। इसी भक्ति के कारण वे पूरे गाँव में प्रसिद्ध थे। दूर-दूर से लोग उनके दर्शन को आते थे।

इसी समय रामकृष्ण को गुरु के रूप में एक महान संत तोताराम जी मिले, जिनके सानिध्य में इन्हें दैवी दर्शन एवं ज्ञान की प्राप्ति हुई। अब वे शाश्वत शांति की अवस्था में थे। संत तोताराम जी ने रामकृष्ण को अपनी इंद्रियों पर नियंत्रण करने में समर्थ बना दिया। इनका विवाह शारदा देवी से हुआ था।

रामकृष्ण जी ने अपनी आध्यात्मिक साधना के बल पर अनेक सिद्धियों को प्राप्त किया। एक बार एक व्यक्ति ने किसी महात्मा की महिमा का वर्णन करते हुए रामकृष्ण से कहा कि-‘‘वह महात्मा खड़ाऊँ से नदी पार कर जाते हैं। यह बड़े आश्चर्य का विषय है।’’ रामकृष्ण परमहंस धीरे से मुस्कराए और बोले,

''इस सिद्ध का मूल्य केवल दो पैसे है। दो पैसों से साधारण व्यक्ति नाव द्वारा नदी पार कर लेता है। इस सिद्ध से केवल दो पैसों का लाभ होता है। अतः इस प्रकार की सिद्ध से क्या लाभ है ? एक महान विचारक व उपदेशक के रूप में उन्होंने बहुत से लोगों को प्रेरित किया।

रामकृष्ण परमहंस का महाप्रयाण 16 अगस्त, 1886 को हुआ। किंतु इसके पूर्व ही उन्होंने नवयुवकों के एक दल को अपने आध्यात्मिक उद्देश्य को आगे बढ़ाने के लिए विशेष रूप से शिक्षित कर दिया था। इन्हीं नवयुवकों में से एक परम तेजस्वी विवेकानंद जी ने अपने सहयोगियों के साथ 'रामकृष्ण मिशन' की स्थापना की। विवेकानंद जी के नेतृत्व में उन सबने रामकृष्ण परमहंस के संदेशों का भारत तथा विश्व के अन्य देशों में प्रचार-प्रसार किया तथा विश्व पटल पर भारत को गौरवान्वित किया। इस मिशन को वर्ष 1998 में भारत सरकार द्वारा 'गांधी शांति पुरस्कार' से सम्मानित किया जा चुका है।

रामकृष्ण परमहंस के कई ऐसे ''अनमोल वचन'' हैं जो मनुष्य को जीवन का सही मार्ग दिखाते हैं, यथा-

स कर्म के लिए भक्ति का आधार होना आवश्यक है।

स उसका जन्म वृथा है जो दुर्लभ मानव जनम पाकर भी इसी जीवन में भगवान को पाने की चेष्टा नहीं करता।

स जिसने आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त कर लिया, उस पर काम और लोभ का विष नहीं चढ़ता।

स जब हवा चलने लगे तो पंखा छोड़ देना चाहिए परंतु ईश्वर की कृपा दृष्टि जब होने लगे तो प्रार्थना तपस्या नहीं छोड़नी चाहिए।

स यदि तुम ईश्वर की दी गई शक्तियों का सदुपयोग नहीं करोगे तो वह अधिक नहीं देगा अर्थात् ईश-कृपा के योग्य बनने के लिए भी पुरुषार्थ चाहिए।

स पानी और उसका बुलबुला एक ही चीज है उसी प्रकार जीवात्मा और परमात्मा एक ही चीज है।

स मैले शीशे में सूर्य की किरणों का प्रतिबिंब नहीं पड़ता, उसी प्रकार जिनका अंतःकरण मलिन और अपवित्र है उनके हृदय में ईश्वर के प्रकाश का प्रतिबिंब नहीं पड़ सकता।

स मैं भौतिक सुखों को प्रदान करने वाली विद्या नहीं चाहता हूँ। मैं उस विद्या को चाहता हूँ जिससे हृदय में ज्ञान का उदय होता है।

स्वामी जी आचरण की शुद्धता पर बल देते थे। उन्होंने अपने आचरण से समाज को सदैव दिशा प्रदान की।वह जातिवाद एवं धार्मिक पक्षपात के मुखर विरोधी थे। इनका अभिमत था कि निःस्वार्थ कर्म, आध्यात्मिक गुण,ऊँचे आदर्श,दया, पवित्रता,प्रेम और भक्ति ही मनुष्य को चेतना के ऊँचे स्तर पर ले जाती है।

रामकृष्ण परमहंस जी का अंतर्मन अत्यंत निश्छल, सहज व विनयशील था। इनकी बाल सुलभ सरलता और मंत्रमुग्ध मुस्कान से हर कोई आकर्षित हो जाता था। रामकृष्ण परमहंस द्वारा स्थापित 'बेलूरमठ' हम भारतीयों की प्रेरणा का जीवंत रूप है। आज भी रामकृष्ण जी के विचार व उपदेश हम सभी भारतवासियों को अनुप्राणित कर रहे हैं।

उनके बारे में गांधी जी का अभिमत था- ‘‘रामकृष्ण परमहंस का जीवन चरित्र धर्म के आचरण का व्यावहारिक विवरण है। उनका जीवन हमारे लिए ईश्वर की शक्ति प्रदान करता है। उनका जीवन अहिंसा का साकार पाठ है।’’

अभ्यास

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. स्वामी रामकृष्ण परमहंस का जन्म कब और कहाँ हुआ था ?

2. सत्रह वर्ष की आयु में कोलकाता आने पर रामकृष्ण ने क्या अनुभव किया ?

3. रामकृष्ण की भक्ति देखकर लोग क्यों आश्चर्य करते थे ?

4. रामकृष्ण परमहंस के प्रमुख उपदेशों का वर्णन कीजिए।

5. रामकृष्ण परमहंस के व्यक्तित्व की विशेषताओं को अपने शब्दों में लिखिए।